- ग़ीबत करने वाले को समझाने का एक नया अन्दाज़ 02
- सामने कुछ पीछे कुछ 03
- दरख़्त लगा रहा हूं 06
- कब ज़िक्रुल्लाह करना गुनाह है ! 08
- ग़ीबत की बदबू 11
- आ़लिम की ग़ीबत करने वाला रह़मत से मायूस 18
- तौ़हीने उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ 10 पैरे 26

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

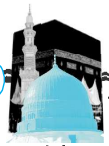

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

दोज़ख़ के कुत्ते

येह रिसाला **(दोज़ख़ के कुत्ते)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद 1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

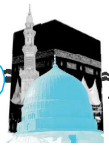

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

येह मज़्मून "ग़ीबत की तबाह कारिया" के सफ़्ह़ा 125 ता 146 से लिया गया है।

दोज़ख़ के कुत्ते

दुआए अ़त्तार

या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 31 सफ़्ह़ात का रिसाला "**दोज़ख़ के कुत्ते**" पढ़ या सुन ले उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रख।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा उस की आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा। (مُعْجَمُ اَوْسَط ج٥ ص٢٥٢ حديث٧٢٣٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये कहे : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस का ज़िक्र उसी त़रह़ करो जिस त़रह़ अपनी ग़ैर मौजूदगी में तुम अपना ज़िक्र होना पसन्द करते हो। (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّين ص١٩٢)

फ़ुलां ने मेरी ग़ीबत की येह जान कर ग़ुस्से न हों : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अपनी **ग़ीबत** करने वाले पर **मुश्तइल** (या'नी ग़ुस्से) होना मुनासिब नहीं उस से

www.dawateislami.net

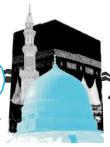

तो तुम्हें महब्बत करनी चाहिये कि उस के **ग़ीबत** करने की वज्ह से तुम्हें सवाब हासिल हो रहा है! अगर्चे उस ने इस बात का क़स्द (या'नी इरादा) नहीं किया। मज़ीद फ़रमाते हैं : जो शख़्स उस आदमी पर गुस्सा करे जिस की नेकियां अपने हाथ आ रही हैं वोह बे वुकूफ़ है अलबत्ता किसी शरई वज्ह से ग़ज़बनाक होना सहीह है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۱۹۳)

ग़ीबत करने वाले को समझाने का एक नया अन्दाज़ :

سُبْحٰنَ اللّٰه! हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इर्शादे गिरामी से हमें येह भी दर्स मिल रहा है कि अगर **ग़ीबत** करने वाले के साथ जवाबी कारवाई की गई तो नफ़रत की दीवार मज़ीद मज़्बूत हो जाएगी, फ़साद बढ़ेगा और अगर उस को महब्बत से समझाने की कोशिश की गई तो اِنْ شَآءَاللّٰه वोह **ग़ीबत** ही से बाज़ आ जाएगा। आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक, दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, **"ना चाक़ियों का इलाज"** सफ़हा 22 ता 23 पर है : येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ महब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये اِنْ شَآءَاللّٰه इस के मुस्बत नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। **वल्लाहिल मुजीब** ! वोह लोग बड़े ख़ुश नसीब हैं जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वाले को मुआफ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब के ज़िम्न में पारह 24 सूरए حٰمٓ السَّجْدَه की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद है :

www.dawateislami.net

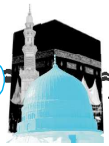

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

चश्मे करम हो ऐसी कि मिट जाए हर ख़ता
कोई गुनाह मुझ से न शैतां करा सके

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 412)

अल्लाहु जब्बार की ख़ुफ़्या तदबीर का शिकार : ह़ज़रते सय्यिदुना **बक्र मुज़नी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह लोगों के ऐबों का वकील बना हुवा है (या'नी सब की पोलें खोलता और **ग़ीबतें** करता फिरता है) तो जान लो कि वोह **अल्लाह** पाक का दुश्मन है और **अल्लाहु** जब्बार की **ख़ुफ़्या तदबीर** का शिकार है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۱۹۷)

सामने कुछ पीछे कुछ : ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उन लोगों पर तअ़ज्जुब है जो पीछे से तो इस्लामी भाइयों की **ग़ीबत** कर के उन की इ़ज़्ज़त की धज्जियां उड़ाते हैं मगर जब सामने आते हैं तो ख़ूब मह़ब्बत का इ़ज़्हार करते और उन की ता'रीफ़ शुरूअ़ कर देते हैं। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۱۹۷)

निफ़ाक़ से नफ़रत : जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तारिकुद्दुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर कहा : तारिकुद्दुन्या

www.dawateislami.net

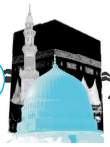

होने से मख़्लूक़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़ुयूज़ो बरकात से महरूम हो गई है ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस के जवाब में मुन्दरजए ज़ैल दो शे'र पढ़े :

ذَهَبَ الْوَفَاءُ ذِهَابَ اَمْسِ الذَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مُخَايِلٍ وَّ مَآرِبِ

يُفْشُوْنَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَ قُلُوْبُهُمْ مَحْشُوَّةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ा किसी जाने वाले कल की त़रह़ चली गई और लोग अपने ख़यालात में ग़र्क़ हो कर रह गए। लोग यूं तो एक दूसरे के साथ इज़्हारे महब्बत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल एक दूसरे के बुग़्ज़ो कीने के बिच्छूओं से लबरेज़ हैं ! (تذکرۃ الاولیا ص۲۲)

आज कल निफ़ाक़ का अन्दाज़ : ऐ आशिक़ाने औलिया !

देखा आप ने ! सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लोगों की मुनाफ़क़त वाली रविश से तंग आ कर ख़ल्वत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। उस पाकीज़ा दौर में भी येह सूरते ह़ाल होने लगी थी तो अब तो जो ह़ाल बेह़ाल है उस का किस से शिक्वा कीजिये। आह ! आज कल तो अक्सर लोगों का ह़ाल ही अ़जीब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो एक दूसरे के साथ निहायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और ख़ूब ह़ाल अह़वाल पूछते हैं, हर त़रह़ की ख़ात़िर दारी और ख़ूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठन्डी बोतल पिला कर निहाल करते हैं तो कभी चाय पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं। ब ज़ाहिर हंस हंस कर ख़ुश कलामी व क़ीलो क़ाल करते हैं मगर अपने दिल में उस के बारे में बुग़्ज़ो मलाल रखते हैं, इसी लिये तो मिलने वाले जूं ही जुदा होते हैं उन की **ग़ीबतें** शुरूअ़ कर देते हैं, उन के उ़यूब बयान कर के हंसते हैं कि फ़ुलां शख़्स ऐसा है फ़ुलां

www.dawateislami.net

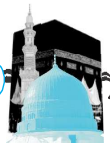

वैसा है फुलां शख़्स को क्या हो गया है हमेशा बन ठन कर फिरता है और फुलां शख़्स की चाल कैसी अ़जीब है कि देख कर हंसी आती है और फुलां शख़्स कितना बे ह़या है कि उस की बातों को बयान करने ही से हम को शर्म आती है और फुलां शख़्स मग़रूर मा'लूम होता है कि लोगों से बातें बहुत कम करता है और फुलां शख़्स बे वुक़ूफ़ है लोगों से बात करने की तमीज़ नहीं रखता और फुलां शख़्स अ़जीब मस्ख़रा है कि गोया हीजड़ा हो ! फुलां बहुत शरारती है, फुलां मेरे पैसे खा गया है, अरे वोह तो पक्का 420 है।

ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें *येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये*
ज़ाहिरो बातिन हमारा एक हो *येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम : आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 (312 सफ़्ह़ात) सफ़्ह़ा 173 पर है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाया जिस से वोह तौबा कर चुका है, तो मरने से पहले वोह ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाएगा। (سُنَنِ ترمذی ج٤ ص٢٢٦ حدیث ٢٥١٣)

ताइब को शरमिन्दा किया तो ख़ुद गुनाह में फंस गया :

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मा'लूम हुवा जब कोई मुसल्मान किसी गुनाह से

तौबा कर ले तो अब उस गुनाह के बारे में उस को शरमिन्दा नहीं करना चाहिये इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि किसी को उस के उस गुनाह की वज्ह से आ़र (या'नी शर्म) न दिलाए (जिस से वोह तौबा कर चुका हो) क्यूं कि मैं ने एक बार किसी को (तौबा के बा वुजूद) उस के गुनाह के सबब आ़र दिलाई (या'नी शरमिन्दा किया) तो बीस साल के बा'द मैं ख़ुद उस में मुब्तला हो गया। (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّيْن ص۱۹۷)

दरख़्त लगा रहा हूं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेजा बक बक की आ़दत आदमी को न बोलने का बुलवाती और नाकों चने चबवाती है, ख़ूब **ग़ीबतें** करवाती और चुग़्लियां खिलवाती है, आदमी चुप रहे इसी में आ़फ़िय्यत है और बोलना है तो अच्छा बोले, **ज़िक्रुल्लाह** करे देखिये ! **हमारे** प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه को ज़बान का कितना प्यारा इस्ति'माल बताया आप भी सुनिये और झूमिये चुनान्चे "सुनने इब्ने माजह" की रिवायत में है : (एक बार) मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : **दरख़्त** लगा रहा हूं। फ़रमाया : मैं बेहतरीन **दरख़्त** लगाने का त़रीक़ा बता दूं ! سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر पढ़ने से हर कलिमे के इ़वज़ (या'नी बदले) **जन्नत** में एक दरख़्त लग जाता है। (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٢٥٢ حديث ٣٨٠٧)

www.dawateislami.net

जन्नत में चार[4] दरख़्त लगेंगे : ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस ह़दीसे पाक में चार कलिमे इर्शाद फ़रमाए गए हैं : ﴿1﴾ سُبْحٰنَ اللّٰه ﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ﴿3﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ﴿4﴾ اَللّٰهُ اَكْبَر येह चारों कलिमात पढ़ें तो **जन्नत** में **चार दरख़्त** लगाए जाएं और कम पढ़ें तो कम । मसलन अगर سُبْحٰنَ اللّٰه कहा तो एक दरख़्त । इन कलिमात को पढ़ने के लिये ज़बान चलाते जाइये और जन्नत में ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगवाते जाइये ।

عُمر راضائع مَکُن در گفتگو ذِکر اُوکُن ذکر اُوکُن ذکر اُو

(या'नी फ़ालतू बातों में उ़म्रे अ़ज़ीज़ ज़ाएअ़ मत कर, **ज़िक्रुल्लाह** कर, **ज़िक्रुल्लाह** कर, **ज़िक्रुल्लाह**)

80 बरस के गुनाह मुआ़फ़ : इसी त़रह़ ज़बान का एक अच्छा इस्ति'माल येह भी है कि **दुरूदो सलाम** पढ़ते रहिये और गुनाह बख़्शवाते रहिये जैसा कि **दुर्रे मुख़्तार** में है : जो सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूद भेजे और वोह क़बूल हो जाए तो **अल्लाह** पाक **उस के अस्सी (80) बरस के गुनाह** मिटा देगा । (دُرِّمُختار ج۲ ص۲۸٤)

बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्नूअ़ है : बा'ज़ लोग ज़बान का ग़लत़ इस्ति'माल करते हुए इस त़रह़ कह देते हैं : ''**बिस्मिल्लाह** कीजिये !'' ''आओ जी **बिस्मिल्लाह** !'' ''मैं ने **बिस्मिल्लाह** कर डाली'', ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन ''बोनी'' कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी ''**बिस्मिल्लाह**'' कहते हैं, मसलन ''मेरी तो आज अभी तक **बिस्मिल्लाह** ही नहीं हुई !'' जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़

www.dawateislami.net

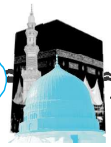

खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है : आइये ! आप भी खा लीजिये, आ़म तौ़र पर जवाब मिलता है : "**बिस्मिल्लाह**" या इस त़रह़ कहते हैं : "**बिस्मिल्लाह** कीजिये !" मक्तबतुल मदीना की किताब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 22 पर है कि इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ **बिस्मिल्लाह** कहने को उ़लमा ने बहुत सख़्त मम्नूअ़ क़रार दिया है। (बहारे शरीअ़त) हां येह कह सकते हैं : **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, मसलन بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُم या'नी **अल्लाह** पाक हमें और तुम्हें बरकत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह** पाक बरकत दे।

बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है : ह़राम व ना जाइज़ काम से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए, ह़रामे क़त़्ई काम से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ना कुफ़्र है चुनान्चे "फ़तावा आ़लमगीरी" में है : शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त **बिस्मिल्लाह** कहना कुफ़्र है। (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۳)

कब ज़िक्रुल्लाह करना गुनाह है ! : याद रखिये ! ज़बान से ज़िक्रो दुरूद बाइ़से अज्रो सवाब भी है और बा'ज़ सूरतों में मम्नूअ़ भी मसलन "मक्तबतुल मदीना की किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 533 पर है : गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस ग़रज़ से **दुरूद शरीफ़** पढ़ना या سُبْحٰنَ اللّٰہ कहना कि उस चीज़ की उ़म्दगी

www.dawateislami.net

ख़रीदार पर ज़ाहिर करे **ना जाइज़** है। यूंही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता'ज़ीम को उठें और जगह छोड़ दें **ना जाइज़** है।

(رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۲۸۱)

इस्तिक़्बाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाएं बुलन्द करना : ऐ आशिक़ाने रसूल ! मज़्कूरा जुज़्इय्ये के पेशे नज़र मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) अक्सर इस्लामी भाइयों को समझाता रहता हूं कि मेरी आमद पर **"अल्लाह अल्लाह"** की सदाएं बुलन्द न किया करें क्यूं कि ब ज़ाहिर यहां ज़िक्रुल्लाह नहीं इस्तिक़्बाल मक़्सूद होता है।

जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ज़ुल जलाल उस की ग़फ़्लत है उस पर वबालो नकाल[1]
क़ा'रे ग़फ़्लत[2] से हम को ख़ुदाया निकाल हम हों ज़ाकिर[3] तेरे और मज़्कूर[4] तू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश, स. 15)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अपनी नेकियां तुम्हें क्यूं दूं ? : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कहा : मुझे ख़बर मिली है आप मेरी **ग़ीबत** करते हैं ! फ़रमाया : मेरे नज़्दीक तुम्हारी अहम्मिय्यत इतनी ज़ियादा भी नहीं कि मैं अपनी नेकियां तुम्हारे ह़वाले कर दूं। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۱۸۳)

1. दुख, अ़ज़ाब। 2. ग़फ़्लत का गढ़ा। 3. ज़िक्र करने वाला 4. ज़िक्र किया गया

www.dawateislami.net

ग़ीबत गोया नेकियां फेंकने की मशीन है : हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** करने वाले की मिसाल उस शख़्स जैसी है : जो मिन्जनीक़ (या'नी पथ्थर फेंकने की हाथ से चलाई जाने वाली पुराने दौर की मशीन) के ज़रीए़ अपनी नेकियों को मशरिक़ व मग़रिब हर त़रफ़ फेंकता है। (تنبيهُ الْمُغتَرِّين ص ١٩٣)

कभी ग़ीबत नहीं की : हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का इर्शाद है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू आ़सिम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे जब से अ़क़्ल (या'नी समझ) आई है कि **ग़ीबत** ह़राम है मैं ने कभी भी **ग़ीबत** नहीं की। (تَهذِيبُ الْاَسماء وَاللُّغات لِلنَّوَوى ج٢ ص٥٢٩)

जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़लतियां करता है : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में फ़रमाते हैं : ज़बान की ह़िफ़ाज़त से नेक आ'माल मह़फ़ूज़ होते हैं क्यूं कि जो शख़्स ज़बान का ध्यान नहीं रखता, हर वक़्त बोलता ही रहता है, वोह उ़मूमन लोगों की **ग़ीबत** में मुब्तला हो जाता है। (مِنهاجُ العابِدين ص ٦٥) मशहूर मुह़ावरा है : **مَنْ كَثُرَ لَغَطُهٗ كَثُرَ سَقَطُهٗ** या'नी जो ज़ियादा बोलता है ज़ियादा ग़लतियां करता है।

दीवाने हो जाओ : ऐ आशिक़ाने रसूल ! अगर लब खोलना और मुंह से बोलना ही है तो तिलावत कीजिये, ना'त शरीफ़ पढ़िये, ख़ूब ख़ूब ज़िक्रे इलाही कीजिये। **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

﴿1﴾ इस कसरत के साथ ज़िक्रुल्लाह किया करो कि लोग दीवाना कहने लगें। (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٢ ص١٧٣ حديث ١٨٨٢)

www.dawateislami.net

﴿2﴾ **अल्लाह** पाक का इतनी कसरत से ज़िक्र करो कि मुनाफ़िक़ीन तुम्हें रियाकार कहने लगें। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج ۱۲ ص ۱۳۱ حدیث ۱۲۷۸۶)

जन्नत के महल्लात हासिल करने का नुस्ख़ा : ज़बान के उ़म्दा इस्ति'माल के लिये एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये और झूमिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि हम गुनाह गारों को अपने रब से जन्नत दिलवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने **قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ** (पूरी सूरत) को 10 बार पढ़ा **अल्लाह** पाक उस के लिये **जन्नत में महल** बनाता है जिस ने 20 बार पढ़ा उस के लिये दो महल बनाता है जिस ने 30 बार पढ़ा उस के लिये तीन महल बनाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त हमारे बहुत से महल्लात होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है। (سُنَنِ دارمی ج ۲ ص ۵۵۲ حدیث ۳۴۲۹)

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ीबत की बदबू : ग़ीबत करने से एक मख़्सूस **बदबू** निकलती है। पहले जब कोई **ग़ीबत** करता था तो बदबू के सबब सब को मा'लूम हो

www.dawateislami.net

जाता था कि **ग़ीबत** हो रही है ! मगर अब **ग़ीबत** की इस क़दर कसरत हो गई है कि हर त़रफ़ इस की **बदबू** के भबके उठ रहे हैं मगर हमें **बदबू** नहीं आती क्यूं कि हमारी नाक इस की बदबू से अट गई है। इस को यूं समझिये कि जब गटर साफ़ की जा रही होती है तो आ़म शख़्स उस की बदबू के बाइ़स वहां खड़ा नहीं रह सकता मगर भंगी को कुछ भी पता नहीं चलता इस लिये कि उस की नाक उस गन्दगी की बदबू से अट चुकी होती है। चुनान्चे **फ़तावा रज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 720 पर है : **झूट** और **ग़ीबत** मा'नवी नजासत (या'नी बात़िनी गन्दगियां) हैं व लिहाज़ा **झूटे** के मुंह से ऐसी **बदबू** निकलती है कि ह़िफ़ाज़त के फ़िरिश्ते उस वक़्त उस के पास से दूर हट जाते हैं जैसा कि ह़दीस में वारिद हुवा है और इसी त़रह़ एक बदबू की निस्बत **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि येह उन के मुंह की सड़ांद (या'नी बदबू) है जो मुसल्मानों की **ग़ीबत** करते हैं और हमें जो **झूट** या **ग़ीबत** की बदबू महसूस नहीं होती उस की वज्ह येह है कि हम उस से मालूफ़ (या'नी इस के आ़दी) हो गए हमारी नाकें उस से भरी हुई हैं जैसे चमड़ा पकाने वालों के महल्ले में जो रहता है उसे उस की **बदबू** से ईज़ा नहीं होती दूसरा आए तो उस से नाक न रखी जाए। मुसल्मान इस नफ़ीस फ़ाएदे (या'नी उ़म्दा नतीजे) को याद रखें और अपने रब से डरें, **झूट** और **ग़ीबत** तर्क करें। क्या مَعَاذَاللّٰه मुंह से पाख़ाना निकलना किसी को पसन्द होगा ? बात़िन की नाक खुले तो मा'लूम हो कि **झूट** और **ग़ीबत** में पाख़ाने से बदतर सड़ांद (या'नी

www.dawateislami.net

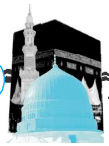

बदबू) है **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब बन्दा **झूट** बोलता है, उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।" (سُنَنِ تِرمِذی ج۳ص۳۹۲حدیث ۱۹۷۹) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी है हम ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर थे कि एक बदबू उठी, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जानते हो कि येह बदबू क्या है, येह उन की बदबू है जो मुसल्मानों की **ग़ीबत** करते हैं। (ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنیا ص۱۰٤رقم۷۰)

अल्लाह हमें झूट से ग़ीबत से बचाना मौला हमें क़ैदी न जहन्नम का बनाना
ऐ प्यारे ख़ुदा अज़ पए सुल्ताने ज़माना जन्नत के मह़ल्लात में तू हम को बसाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हर बाल के बदले एक एक नूर : ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमें ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल सीखना चाहिये। वरना ख़ुदा की क़सम ! **ग़ीबतें** और तोह्मतें और मुख़्तलिफ़ गुनाहों की शामतें आख़िरत में फंसा सकती हैं। वाक़ेई अगर हम अपनी ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करें तो वक़्तन फ़ वक़्तन ढेर सारी नेकियां ह़ासिल कर सकते हैं। सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ार में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में **नूर** होगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج۱ ص٤۱۲حدیث ٥٦۷)

www.dawateislami.net

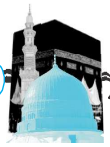

दर्स देने वालों के लिये दुआए अ़त्तार : याद रहे ! तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ, दुरूदो सलाम, ना'त, ख़ुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा सब "ज़िक्रुल्लाह" में शामिल हैं। इस्लामी भाइयों को चाहिये कि रोज़ाना कम से कम 12 मिनट बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दें। जितनी देर तक दर्स देंगे اِنْ شَآءَاللّٰه उतनी देर तक के लिये दीगर फ़ज़ाइल के इ़लावा उसे बाज़ार में **ज़िक्रुल्लाह** करने का सवाब भी ह़ासिल होगा। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की भी क्या ख़ूब **मदनी बहारें** हैं, काश ! इस्लामी भाई मस्जिद, घर, बाज़ार, चौक, दुकान वग़ैरा में और इस्लामी बहनें घर में रोज़ाना **दो दर्स** देने या सुनने का मा'मूल बना कर ख़ूब ख़ूब सवाब लूटें और साथ ही साथ इस **दुआए अ़त्तार** के भी ह़क़दार बन जाएं **: या रब्बे मुस्तफ़ा** ! जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहन रोज़ाना दो दर्स दें या सुनें उन को और मुझे बे ह़िसाब बख़्श और हमें हमारे **मदनी आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तन्हा दर्स देने की बरकत : फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की मदनी बहारों का तो क्या ही कहना ! एक इस्लामी भाई अपने घर की छत पर खड़े थे कि उन की नज़र गली में खड़े **दा'वते इस्लामी** के एक बा इ़मामा इस्लामी भाई पर पड़ी जो अकेले ही **चौकदर्स** दे रहे थे एक भी इस्लामी भाई दर्स सुनने के लिये रुक नहीं रहा था। वोह यूं तो दीन से अ़मली तौ़र

www.dawateislami.net

पर इस क़दर दूर थे कि सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाते मगर न जाने क्यूं उन को तन्हा दर्स देता देख कर उन्हें तर्स आ गया सोचा कि चलो बेचारे के साथ कोई नहीं बैठा तो मैं ही जा कर बैठ जाता हूं, घर से बाहर निकले और वोह **चौकदर्स** में शरीक हो गए। سُبْحٰنَ اللّٰه उन का चौकदर्स में शिर्कत उन की हिदायत का सबब बन गई और वोह **मदनी माहौल** से वाबस्ता हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हें अपने यहां **मदनी इन्आमात** की ज़िम्मेदारी भी मिली। एक दिन तो वोह था कि येह सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाया करते थे और اَلْحَمْدُ لِلّٰه अब ख़ुद इन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ का ताज जगमगा रहा है।

मक़्बूलिय्यत का मदार क़िल्लत व कसरत पर नहीं :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की कितनी ज़बर दस्त बरकत है ! वोह इस्लामी भाई कैसे जज़्बे वाले थे कि कोई न मिला तो तन्हा चौकदर्स शुरूअ़ कर दिया ! इस में सभी के लिये दर्स के **मदनी फूल** हैं उन का अकेले दर्स देना एक मुसल्मान के **मदनी माहौल** से वाबस्ता होने का सबब बन गया। येह भी अन्दाज़ा लगाइये कि तन्हा दर्स देते हुए देख कर जब ऐसे शख़्स को रह़म आ गया जो कि इन चीज़ों से दूर भागता था तो **अल्लाह** करीम तन्हा या कम ता'दाद में दर्स देने वालों से कितनी मह़ब्बत करता और किस क़दर उन पर रह़मो करम फ़रमाता होगा। **याद रखिये !** क़िल्लत व कसरत पर मक़्बूलिय्यत

www.dawateislami.net

का दारो मदार नहीं। जो इस्लामी भाई भीड़भाड़ के बिग़ैर और ईको साउन्ड न हो तो बयान या ना'त शरीफ़ पढ़ने के लिये तय्यार नहीं होते उन की तरग़ीब के लिये अ़र्ज़ है कि बारगाहे ख़ुदा वन्दी में सिर्फ़ इख़्लास देखा जाता है। ह़ाज़िरीन और चाहने वालों की कसरत हो मगर ख़ुलूस न हो तो कोई फ़ाएदा नहीं होता। यक़ीनन जितने भी अम्बिया हुए सब के सब **अल्लाह** पाक के मक़्बूल तरीन बन्दे हैं और हर एक ने 100 फ़ीसदी अपनी ज़िम्मेदारी निभाई मगर बा'ज़ **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर सिर्फ़ एक ही आदमी ईमान लाया चुनान्चे

सिर्फ़ एक फ़र्द ने तस्दीक़ की : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जन्नत के बारे में सब से पहले शफ़ाअ़त करने वाला होउंगा, और किसी नबी की तस्दीक़ इतनी न की गई जितनी मेरी तस्दीक़ की गई, बा'ज़ **अम्बियाए किराम** (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) वोह हैं जिन की तस्दीक़ उन की उम्मत में से सिर्फ़ एक शख़्स ने की है।

(صحیح مُسلِم ص۱۲۸ حدیث۳۳۲)

950 साल में सिर्फ़ 80 आदमी ईमान लाए : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली के **एक** मा'ना येह हैं कि जितने ज़ियादा लोगों ने मुझ पर ईमान क़बूल किया इतने लोग किसी और नबी पर ईमान नहीं लाए येह बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि दूसरे नबी किसी ख़ास क़ौम के नबी होते थे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारे

www.dawateislami.net

जहान के नबी हैं नीज़ और नबियों का ज़मानए नुबुव्वत महदूद था, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत ता क़ियामत है। मज़ीद लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने साढ़े नव सो (950) साल तब्लीग़ फ़रमाई मगर सिर्फ़ अस्सी (80) आदमी ईमान लाए आठ (8) आदमी अपने घर के, बहत्तर (72) आदमी दूसरे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तेईस (23) साल तब्लीग़ फ़रमाई, देख लो आज तक क्या ह़ाल है !

(मिरआत, जि. 8, स. 6,7)

ग़ीबत गुनाहे कबीरा है : हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सह़ीह़ अह़ादीसे मुबारका में है कि (1) **ग़ीबत** सूद से बढ़ कर है (2) अगर इसे (या'नी ग़ीबत को) समुन्दर के पानी में डाल दिया जाए तो उसे भी बदबूदार कर दे (3) (ग़ीबत करने वाले) दोज़ख़ में मुर्दार खा रहे थे (4) उन (ग़ीबत करने वालों) की फ़ज़ा बदबूदार थी (5) उन्हें (या'नी ग़ीबत करने वालों को) क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा था।'' इन में से बा'ज़ अह़ादीसे मुबारका ही इस के **कबीरा** होने के लिये काफ़ी हैं, पस जब येह सारी जम्अ़ हो जाएं तो फिर **ग़ीबत** क्यूंकर **कबीरा गुनाह** न कहलाएगी ?

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج ٢ ص ٢٨)

आ़लिम के बारे में एह़तियात़ की ह़िकायत : हज़रते शैख़ अफ़ज़लुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से जब किसी आ़लिमे दीन के मक़ाम के बारे में पूछा जाता तो (ग़ीबत में जा पड़ने के ख़ौफ़ से) फ़रमाते : मेरे इ़लावा किसी और से पूछो मैं तो लोगों को कमाल और बेहतरी ही की निगाह से देखता

www.dawateislami.net

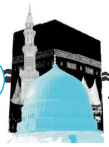

(और हर एक के बारे में हुस्ने ज़न से काम लेता) हूं, मेरे पास कश्फ़ नहीं जिस के ज़रीए इन के उन मक़ामात की मा'लूमात कर सकूं जो रब्बे काएनात के यहां हैं। और ह़दीस शरीफ़ में है : اَلظَّنُّ اَكْذَبُ الْحَدِيْث۔[1] (**तरजमा :** बद गुमानी सब से झूटी बात है।) (تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص۱۹۳)

अच्छा गुमान इ़बादत है : ऐ आशिक़ाने रसूल ! आज कल बद गुमानी का मरज़ आ़म है। मुसल्मान के बारे में अच्छा गुमान कर के सवाब कमाना चाहिये चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इ़बादत से है। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص٣٨٨ حدیث٤٩٩٣) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर **बद गुमानी** न करना येह भी अच्छी इ़बादात में से एक **इ़बादत** है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 621)

आ़लिम की ग़ीबत करने वाला रह़मत से मायूस :

अफ़्सोस ! आज कल مَعَاذَ الله उ़लमा की ब कसरत **ग़ीबत** की जाती है। लिहाज़ा शैत़ान किसी आ़लिमे दीन की **ग़ीबत** पर उभारे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स कबीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस इर्शाद को याद कर के ख़ुद को डराइये : जिस ने किसी फ़क़ीह (आ़लिम) की **ग़ीबत** की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा : "**येह अल्लाह** पाक **की रह़मत से मायूस है।**" (مُكاشَفةُ القُلوب ص٧١)

مدینہ

[1] صَحیح بُخاری ج٤ ص١١٧ حدیث٦٠٦٦

दोज़ख़ के कुत्ते काटेंगे : **ग़ीबत** उ़लमा की हो या अ़वाम की, ग़ीबत फिर ग़ीबत ही है, **ख़ुदा की क़सम !** इस का अ़ज़ाब न सहा जा सकेगा चुनान्चे एक बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ عَنْه से फ़रमाया : लोगों की **ग़ीबत** न करो वरना **दोज़ख़ के कुत्ते** तुम्हें काटेंगे। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۷ ص۵۷۲، مِنهاجُ العابِدین ص۶۶)

रात के सन्नाटे में कुत्ता ह़म्ला आवर हो तो..... : ऐ आशिक़ाने रसूल ! मज़्कूरा रिवायत को बार बार पढ़िये और तसव्वुर कीजिये कि रात का सन्नाटा हो, कुत्ता भोंकता हुवा पीछे आ रहा हो और आप उस से बचने के लिये तदबीरें कर रहे हों कि यकायक झपट कर आप के कुरते का दामन अपने मुंह से पकड़ ले ! उस वक़्त आप की ह़ालत क्या होगी ! अब ग़ौर कीजिये किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** कर दी और मरने के बा'द अगर सज़ाअन **जहन्नम के कुत्ते** ने कुरते के दामन को नहीं बदन को और वोह भी पकड़ा ही नहीं काटना शुरूअ़ कर दिया तो उस वक़्त क्या गुज़रेगी !

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 712)

उ़लमा की ग़ीबत की 15 मिसालें : ह़ालात बहुत ना गुफ़्ता बिह हैं, शैत़ान ने अक्सर मुसल्मानों को उ़लमाए ह़क़ से काफ़ी दूर कर दिया है, अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! मुंह भर कर अब उ़लमाए किराम की **ग़ीबतें** की जाती हैं। उ़लमा की **ग़ीबत** की चन्द मिसालें

www.dawateislami.net

मुलाहज़ा हों : ❁ वा'ज़ के पैसे लेता है ❁ बड़ा बद ज़बान है ❁ पेटू है ❁ ह़लवे मांडे खाता है ❁ खाना डट कर खाता है ❁ उस दिन उलटे हाथ से पानी पी रहा था ❁ अपने आप को सब से बड़ा आ़लिम समझता है ❁ वा'ज़ में नाक से बोलता है ❁ बहुत लम्बा बयान करता है ❁ बयान में बस क़िस्से कहानियां सुनाता है ❁ आवाज़ भी "ख़ास" नहीं ❁ भई ! ज़रा बच के रहना "अ़ल्लामा साहिब" हैं ❁ लालची है ❁ छोड़ो छोड़ो यार ! वोह तो **मौलवी** है ❁ (مَعَاذَاللّٰه आ़लिमों को बा'ज़ लोग ह़क़ारत से कह देते हैं) येह मुल्ला लोग।

आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं : आ़म आदमी और आ़लिमे दीन की **ग़ीबत** में बड़ा फ़र्क़ है, आ़लिम की **ग़ीबत** में अक्सर उस की तौहीन का पहलू भी होता है जो कि काफ़ी तश्वीश नाक है। **आ़लिम की तौहीन की तीन सूरतें** और इन के बारे में हुक्मे शर्ई बयान करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 129 पर फ़रमाते हैं : ﴿1﴾ अगर आ़लिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह "आ़लिम" है जब तो **सरीह़ काफ़िर** है और ﴿2﴾ अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाइ़स बुरा कहता है, गाली देता (है और) तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और ﴿3﴾ अगर बे सबब (या'नी बिला वज्ह) रन्ज (बुग़्ज़) रखता है तो

www.dawateislami.net

مَرِيْضُ الْقَلْبِ وَ خَبِيْثُ الْبَاطِن (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला) है और उस (या'नी आ़लिम से ख़्वाह म ख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाले) के **कुफ़्र** का अन्देशा है। "ख़ुलासा" में है : مَنْ اَبْغَضَ عَالِماً مِّنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيْفَ عَلَيْهِ الْكُفْر या'नी जो बिला किसी ज़ाहिरी वज्ह के आ़लिमे दीन से बुग़्ज़ रखे उस पर कुफ़्र का ख़ौफ़ है। (خُلَاصَةُ الفتاوٰی ج٤ص٣٨٨)

उ़लमा की तौहीन के बारे में चन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं :

आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन

सुवाल : क्या आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन भी **कुफ़्र** है ?

जवाब : ब सबबे इल्मे दीन आ़लिमे बे अ़मल की **तौहीन** करना भी **कुफ़्र** है। **आ़लिमे बे अ़मल** भी इल्मे दीन की वज्ह से जाहिल इबादत गुज़ार से ब दरजहा अफ़्ज़ल व बेहतर है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : और क़ुरआन शरीफ़ इन्हें (या'नी उ़लमाए ह़क़ को) मुत्लक़न **वारिस** बता रहा है, ह़त्ता कि इन (में) के बे अ़मल (आ़लिम) को भी या'नी जब कि अ़क़ाइदे ह़क़ पर मुस्तक़ीम (या'नी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी) और हिदायत की त़रफ़ दाई (बुलाने वाला) हो कि **गुमराह** (आ़लिम) **और गुमराही की त़रफ़ बुलाने वाला** (मौलवी) **वारिसे नबी नहीं नाइबे इब्लीस है।**

www.dawateislami.net

وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تعالٰی हां, रब ने तमाम **उ़लमाए शरीअ़त** को कहां **वारिस** फ़रमाया है ? यहां तक कि इन के **बे अ़मल** को भी ! हां, वोह हम से पूछिये, ख़ुदाए पाक फ़रमाता है :

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ؕ (پ۲۲فاطر۳۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो इन में कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और इन में कोई मियाना चाल पर है और इन में कोई वोह है जो **अल्लाह** के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त ले गया येही बड़ा फ़ज़्ल है।

मज़्कूरा बाला आयते करीमा **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़हा 530 पर नक़्ल करने के बा'द मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : **देखो बे अ़मल** (उ़लमा जो) **कि गुनाहों से अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहे हैं उन्हें भी किताब का वारिस बताया और निरा** (या'नी फ़क़त़) **वारिस ही नहीं बल्कि अपने चुने हुए बन्दों में गिना। अह़ादीस** में आया, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

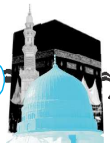

इस आयत की **तफ़्सीर** में फ़रमाया : हम में का जो सब्क़त (बरतरी) ले गया वोह तो सब्क़त ले ही गया और जो मुतवस्सित (या'नी दरमियाना) ह़ाल का हुवा वोह भी नजात वाला है और जो अपनी जान पर ज़ालिम (या'नी गुनहगार) है उस की भी **मग़्फ़िरत** है। (تفسیردُرّ منثور ج۷ص۲۵) आ़लिमे शरीअ़त अगर अपने इ़ल्म पर आ़मिल भी हो (जब तो वोह मिस्ले) **चांद** है (जो) कि आप (ख़ुद भी) ठन्डा और तुम्हें (भी) रोशनी दे वरना (आ़लिमे बे अ़मल मिस्ले) **शम्अ़** है कि ख़ुद (तो) जले मगर तुम्हें नफ़्अ़ दे। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर (या'नी भलाई) की ता'लीम देता और अपने आप को भूल जाता है उस फ़तीले (या'नी चराग़ की बत्ती) की त़रह़ है कि लोगों को रोशनी देता है और ख़ुद जलता है।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۱ ص۷٤ حدیث ۱۱)

जाहिल को आ़लिम से बेहतर जानना कैसा ?

सुवाल : जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझना कैसा ?

जवाब : अगर इ़ल्मे दीन से नफ़रत के सबब जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझता है तो येह **कुफ़्र** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कहना : "इ़ल्म से जहालत बेहतर है या आ़लिम से जाहिल अच्छा होता है।" **कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص۵۱۱) जब कि इ़ल्मे दीन की तौहीन मक़्सूद हो।

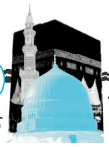

त़ालिबे इल्मे दीन को कूंएं का मेंडक कहना

सुवाल : दीनी त़ालिबे इल्म या आ़लिमे दीन को ब नज़रे ह़क़ारत **कूंएं का मेंडक** कहना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है।

"मौलवी लोग क्या जानते हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ने किसी बात पर ह़क़ारत के साथ कहा : "**मौलवी लोग क्या जानते हैं !**" उस का इस त़रह़ कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मौलवी लोग क्या जानते हैं !" कहना **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 244) जब कि उ़लमा की तह़क़ीर मक़्सूद हो।

"दीन पर अ़मल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है" कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा है कि "**अल्लाह** पाक ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया !"

जवाब : येह उ़लमा की तौहीन की वज्ह से **कलिमए कुफ़्र** है। क्यूं कि **फ़ुक़हाए किराम** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : اَلْاِسْتِخْفَافُ بِالْاَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ या'नी अश्राफ़ (सादाते

www.dawateislami.net

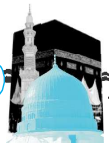

किराम) और उ़लमा की तह़क़ीर (इन्हें घटिया जानना) **कुफ़्र** है।

(مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص۵۰۹)

मौलवियों वाला अन्दाज़

सुवाल : सुन्नी आ़लिमे दीन की त़र्ज़ पर क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ किये जाने वाले किसी मुबल्लिग़ के बयान को ह़क़ारतन ''मौलवियों वाला अन्दाज़'' कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। क्यूं कि इस में उ़लमाए ह़क़ की **तौहीन** है।

''आ़लिम सारे ज़ालिम'' कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : ''आ़लिम सारे ज़ालिम'' येह मक़ूला कैसा है ?

जवाब : मुत़्लक़न उ़लमाए ह़क़्क़ा के बारे में ऐसा जुम्ला कहना **कुफ़्र** है।

आ़लिमे दीन को ह़क़ारत से मुल्ला कहना

सुवाल : जो उ़लमाए किराम को तह़क़ीर की निय्यत से ''मुल्ला मुल्ला'' या ''मुल्ला लोग'' कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर ब सबबे इ़ल्मे दीन उ़लमाए किराम की तह़क़ीर (या'नी ह़क़ारत) की निय्यत से कहा तो **कलिमए कुफ़्र** है। चुनान्चे मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस ने (तौहीन की निय्यत से) **आ़लिम** को उ़वैलिम या अ़लवी (या'नी मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की औलाद) को उ़लैवी कहा उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوض لِلقاری ص۴۷۲) उर्दू ख़्वां ''उ़वैलिम'' या ''उ़लैवी'' नहीं बोलते। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात बेबाकों की

www.dawateislami.net

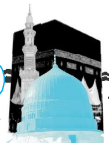

ज़बानों से **मौलवा, मुल्लड़** वग़ैरा अल्फ़ाज़ सुनना (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) याद पड़ता है। बहर ह़ाल **आ़लिमे दीन की ब सबबे इल्मे दीन तौहीन करना या अ़लवी साह़िबान या सादाते किराम की** शराफ़ते ह़सब नसब के सबब किसी क़िस्म का तौहीन आमेज़ लफ़्ज़ बोलना कुफ़्र है।

"मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" कहना

सुवाल : "दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे, इल्मे दीन सीख कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" येह कहना कैसा ?

जवाब : इस जुम्ले में इल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है। क़ाइल पर **तौबा व तज्दीदे ईमान** लाज़िम है और अगर इल्म व उ़लमा की तौहीन ही मक़्सूद थी तो **क़त्ई कुफ़्र** है क़ाइल **काफ़िर व मुरतद** हो गया और उस का **निकाह़** भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी ज़ाएअ़ हुए।

तौहीने उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ 10 पैरे

﴾1﴿ जितने **मौलवी** हैं सब बद मआ़श हैं कहना **कुफ़्र** है जब कि ब सबबे इल्मे दीन, उ़लमाए किराम की तह़क़ीर की निय्यत से कहा हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 454) ﴾2﴿ येह कहना : "आ़लिम लोगों ने देस ख़राब कर दिया।" **कलिमए कुफ़्र है** (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 605) ﴾3﴿ येह कहना **कुफ़्र** है कि

www.dawateislami.net

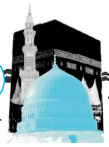

"मौलवियों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये" ﴾4﴿ जो कहे : "इल्मे दीन, को क्या करूंगा ! जेब में रुपै होने चाहिएं।" कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है। ﴾5﴿ किसी ने आ़लिम से कहा : "जा और इल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल कर रख।" येह **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۱) ﴾6﴿ जिस ने कहा : "उ़लमा जो बताते हैं उसे कौन कर सकता है !" येह क़ौल कुफ़्र है। क्यूं कि इस कलाम से लाज़िम आता है कि शरीअ़त में ऐसे अह़काम हैं जो त़ाक़त से बाहर हैं या उ़लमा ने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर झूट बांधा है مَعَاذَ اللہ ! (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧١) ﴾7﴿ येह कहना : "सरीद का पियाला इल्मे दीन से बेहतर है।" **कलिमए कुफ़्र** है। (ایضاً ص ٤٧٢) ﴾8﴿ **आ़लिमे** दीन से उस के इल्मे दीन की वज्ह से बुग़्ज़ रखना कुफ़्र है या'नी इस वज्ह से कि वोह आ़लिमे दीन है। ﴾9﴿ जो कहे : "फ़साद करना **आ़लिम** बनने से बेहतर है" ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۱) ﴾10﴿ **याद रहे !** सिर्फ़ **उ़लमाए अहले** सुन्नत ही की ता'ज़ीम की जाएगी। रहे बद मज़्हब उ़लमा, तो उन के साए से भी भागे कि उन की ता'ज़ीम ह़राम, उन का बयान सुनना, उन की कुतुब का मुत़ालआ़ करना और उन की सोह़बत इख़्तियार करना **ह़राम** और ईमान के लिये ज़हरे हलाहिल है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द

हज़रते अ़ल्लामा मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।

(القول البدیع ص ۲۷۸)

978-969-722-060-1
01013105

فیضانِ مدینہ، محلّہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net